Part-3 Paper-5 Sec-B Unit-3

Africa :- Geographical Account of "Nile Basin"

S. Mazumdar

नील नदी विश्व की सबसे लम्बी नदी है, इसकी विशिष्ट आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभाव के कारण इसे महत्वपूर्ण स्थान सदा मिलता रहा है, इस नदी के कारण ही मरूस्थलीय प्रदेश होने के बावजूद मिस्र/Egypt सघन आबादीवाला है, आज से लगभग 2500 वर्ष पूर्व यूनानी विद्वान हेरोडोटस ने स्पष्टतः कहा था कि "मिस्र नील नदी का वरदान है, Egypt is the gift of Nile."

अफ्रीकी महाद्वीप में नील नदी लम्बाकार पट्टीनुमा प्रदेश में बहती हुई अनेक देशों से गुजरती है, लेकिन मिस्र के अर्थतंत्र में इस नदी का प्रभाव महत्वपूर्ण है, नील नदी घाटी का भौगोलिक वर्णनों को निम्न बिंदुओं के आधार पर स्पष्ट कर सकते हैं।

भौतिक दृश्यभूमि :- (PHYSICAL LANDSCAPE)

A) भौतिक संरचना :→ नील नदी बेसिन का उपरी प्रदेश बुरूण्डी, रूआण्डा एवं युगाण्डा प्रदेशों में विस्तृत है, यह भाग उच्च पठारी ज्वालामुखी पर्वतों एवं महान दरार घाटी वाला क्षेत्र है, यहाँ के पठारी भाग 90 से 2100 मीटर के बीच तथा ज्वालामुखीय पर्वत 4500 मीटर तक ऊँचा है, दरारी घाटी 1200-1500 मीटर के बीच ऊँचा है, नील नदी बेसिन की भौतिक संरचना जटिल, विविध एवं क्षेत्रवार परिवर्तनशील भी रहा है, इस बेसिन की ढाल द० से उ० पू० एवं उ० की ओर है, मध्य अफ्रीकी गणतन्त्र तथा उत्तरी सूडान से होते हुए नील, सोबत एवं इतबारा नदियाँ प्रवाहित होती है, जिसका उद्गम स्थल किलिमंजारो एवं कीनिया ज्वालामुखीय भाग में है, जो अफ्रीका महाद्वीप का सबसे ऊँचा भाग है, यहाँ शांत ज्वालामुखी, लावा-पठार एवं कायान्तरित चट्टानें पाई जाती है, भूवैज्ञानिक प्रमाणों के अनुसार लाखों वर्ष पूर्व यहाँ झील थी, उस झील के अग्रभाग में कटाव तथा झीलों में

अवसाद भरकर यह दलदल में परिवर्तित होता गया है, इसका उ० भाग सिकुड़ता जा रहा जिससे यह नदी खारतुम से लेकर नुबिया मरुभूमि की सीमा के बीच चौड़ी घाटी में बहती है, यहाँ लगातार उपजाऊ अवसादों का जमाव होता रहता है, आस्वान के पास यह घाटी संकरी हो जाती है, यहाँ नदी घाटी से कई नहरे निकाली गई है, मुख्य नदी धीमी गति से बहती है,

जलवायु :→ नील नदी बेसिन प्रदेश की जलवायु अत्यधिक अक्षांशीय विस्तार के कारण परिवर्तन शील है, 4°-5° उ० अक्षांशीय भाग में विषुवतरेखीय एवं आर्द्र एवं उष्ण जलवायु पाई जाती है, यहाँ वर्ष भर वर्षा तथा तापमान ऊँचा रहता है, इस बेसिन के सूडान में सावाना तुल्य शुष्क एवं आर्द्र जलवायु पाई जाती है, तापमान ऊँचा रहता है भूमध्यरेखीय प्रदेशो में जबकि पहाड़ी भागों में तापमान 22°C एवं वर्षा 120-160 cm के बीच होती है,

सूडान प्रदेश में ग्रीष्मकाल में 28°C एवं शीतकाल में 20°C तापमान रहती है, वर्षा ग्रीष्म ऋतु में 69-120 cm के बीच अक्षांशीय दूरी के अनुसार होता है, उ० सूडान व मुख्य मिस्र में नील नूबियन एवं लिबियन मरुस्थलों के बीच बहती है, यहाँ जलवायु शुष्क है, तापान्तर सबसे अधिक एवं वर्षा सबसे कम होती है, शीतकाल में औसत तापमान 12-15°C के बीच जबकि ग्रीष्मकाल में तापमान 28°-35°C के बीच होता है,

तट से दूर आन्तरिक भागों में दैनिक व वार्षिक तापमान ऊँचे रहते हैं, सर्दी की रात में पाला गिरता है तो गर्मियों के दोपहर में 40°C से भी ऊँचा तापमान रहता है, उत्तरी तट पर सम सागरीय जलवायु के प्रभाव से 5-15 cm तक वर्षा हो जाती है, शेष मिस्र में 2-5 cm तक ही वर्षा होती है सूडान के बाद मिस्र की नील नदी घाटी में उत्तर से

दक्षिण की ओर जाने पर वर्षा की मात्रा क्रमशः घटती जाती है।

वनस्पति :- इस नदी घाटी प्रदेश में वनस्पति वर्षा की मात्रा के आधार पर पाई जाती है, विषुवत-रेखीय नील नदी बेसिन में घने वन, ऊँची घास एवं पहाड़ी ढालों पर शीतोष्ण चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिलते हैं सूडान प्रदेश पार्कलैंड के लिए जाने जाते हैं जबकि यहाँ का दलदली प्रदेश एवं पूर्वी पहाड़ी भागों में वन एवं घास दोनों पाए जाते हैं। उत्तरी सूडान एवं मिस्र में मरूस्थलीय शुष्क प्रदेशों में कंटीली झाड़ियाँ एवं छोटी घास पाई जाती है, मरूद्यानों में खजूर का पेड़ और उ० भागों में जैतून के वृक्ष पाए जाते हैं

भूमध्यसागरीय तट, सिंचित प्रदेशों एवं नदी तट के आस पास वृक्षों की कतारें मिलती हैं, सघन कृषि क्षेत्रों में फल एवं सब्जियाँ सिंचाई द्वारा उगाई जाती हैं

इस प्रकार देखते हैं कि सम्पूर्ण नील नदी बेसिन प्रदेश में उत्तर से द० की ओर जाने पर वनस्पति विरल एवं शुष्क होती जाती है, घास का मैदान एवं मरूस्थलीय वनस्पतियाँ उत्तर की ओर ज्यादा पाई जाती है, नदी घाटी से दूर जाने पर भी वनस्पतियाँ एवं हरियाली कम होती जाती है।

प्राकृतिक विभाग :→ नील नदी घाटी की लम्बाई उद्गम से मुहाने तक 6793 km है, नील नदी का बेसिन या प्रवाह तंत्र लगभग 34 लाख वर्ग km में विस्तृत है, इसकी सर्वाधिक चौड़ाई मध्यवर्ती एवं उत्तरी सूडान में है, जबकि यह उपरी मिस्र में अधिक संकरी घाटी एवं उद्गम स्थल के पास दरारी घाटी से होकर बहती है नील नदी घाटी को अध्ययन की सुविधानुसार निम्न भागों में बाँटा जा सकता है

1) उद्गम प्रदेश या उपरी घाटी
2) आस-सड या दलदली प्रदेश

3. श्वेत नील की घाटी
4. नीली नील की घाटी
5. खारतूम से वादी हाफा तक
6. मिस्त्र में नील की मुख्य घाटी
7. नील का डेल्टा

उपरोक्त का वर्णन इस प्रकार है :-

1. उद्गम प्रदेश या उपरी घाटी → नील नदी का उद्गम दो प्रधान शाखाओं में होता है। पश्चिमी शाखा बुरुण्डी राज्य में टांगानिका झील के उत्तरी भाग से प्रारंभ होकर महान दरार घाटी में बहकर कई अन्य झीलों के जल को लेकर उत्तर में सिम्बुलिकी के नाम से अलबर्ट झील में गिरती है।

जबकि पूर्वी शाखा महान दरार घाटी के बीच स्थित विक्टोरिया झील से जिन्जा के पास निकलकर उत्तर में क्योगा झील में गिरती है, इसका नाम यहाँ विक्टोरिया झील है। क्योगा तथा एलबर्ट झील के बीच प्रसिद्ध काबलेगा प्रपात बना हुआ है। इन दो शाखाओं का जल एलबर्ट झील में मिलकर उत्तर में एलबर्ट नील के नाम से बहती है, यहाँ नदी घाटी का ढाल धीमा होने लगता है। नील नदी का उपरी घाटी एवं स्त्रोत प्रदेश जो कि 3° 30' द० अक्षांश से 5° उत्तरी अक्षांश के बीच विस्तृत है, निरन्तर वर्षा, स्थाई झीलें एवं घने वन एवं तर जलवायु के कारण पर्याप्त जल नील नदी को मिलता रहता है।

Contd:-